Date: 10/10/25

MJC-4

Topic: अनुसूचित जाति: परिभाषा

→ डॉ० के० एन० शर्मा - "अस्पृश्य जातियाँ वे हैं जिनके स्पर्श से एक व्यक्ति अपवित्र हो जाय और उसे पवित्र होने के लिए कुछ कृत्य करने पड़े।"

→ आर० एन० सक्सेना ने इसका खण्डन किया है तथा कहा है कि हट्टन के एक उदाहरण के अनुसार ब्राह्मणों को अस्पृश्य मानना पड़ेगा क्योंकि दक्षिण भारत की होलिया जाति के लोग ब्राह्मण को अपने गाँव के बीच से नहीं जाने देते यदि वह चला जाता है तो वे लोग गाँव की शुद्धि करते हैं।

→ Note: स्पष्ट है कि अस्पृश्यता के निर्धारण में छूने मात्र से अपवित्र होने की बात पर्याप्त नहीं है।

→ हट्टन ने उपर्युक्त कठिनाइयों को देखते हुए कुछ निर्योग्यताओं का उल्लेख किया है जो अस्पृश्य जातियों का निर्धारण में सहायक है।

→ आपने उसे अस्पृश्य माना है जो उच्च स्थिति के ब्राह्मणों की सेवा प्राप्त करने के अयोग्य हो, सवर्ण हिन्दुओं की सेवा करने वाले नाइयों, कहारों तथा दर्जियों की सेवा पाने के अयोग्य हो, हिन्दू मन्दिरों में प्रवेश प्राप्त करने में अयोग्य हो, सार्वजनिक सुविधाओं (पाठशाला, सड़क, कुआँ) को उपयोग में लाने के अयोग्य हो, दूषित पेशे से पृथक होने के अयोग्य हो।

→ डा० डी० एन० मजूमदार के अनुसार अस्पृश्य जातियाँ विभिन्न सामाजिक एवं राजनीतिक निर्योग्यताओं से पीड़ित हैं।

PDF by
Dr. Nitish Vardhan
Sociology